

DPN 6743

Title: दशमहाविद्याध्यान / DASAMAHĀVIDYĀ DHYĀNA

Run. No. 2468

Cat. No. 40

Micro. No.

Subject Stotra

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 13 X 10.5

Folios 29

Lines (in a page) 8/10

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.: Together with Siddhavidyā, cāṇḍī,
vṛṣatārka, mahābhairava, nṛtyeśvara -

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu / Muli made

Baund

bhairava, kīpālīkaśāntaka, kṣetrapāla,

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Ganeśādi Stotra.

Both side yellow

Beginning, colophon, post-colophon:

इति दशमहाविद्याध्यान ॥

20

15

10

5

0



१ ॐ ततताकी फूतके स्वाहा ॥ धारु ॥
थोमंत्रनवास्पाक पुये चीत्तधनयागानके
ॐ अनु एगुं फूट स्वाहा ॥ धारु ॥ थोमंत्र
नमीवास्पाक पुये ॥

ॐ दीपवली रोपन दृसेते स्वाहा ॥ धारु ॥

थोमंत्रन कपालास्पाक पुये

ॐ बालकुमारी स्वाहा ॥ धारु ॥ थोमंत्रन

मोचा होयेया ५ मूषव पुये

ॐ नमो गुरु आग्या ॐ अहनाये फूफ
ट् स्वाहा ॥ धारु ॥ थोमंत्रन मीषाश
धूतववया पुये ॥

ॐ लोकीं रक्षोघ्राये मदघ्राये भूता
पस्मारहारिने शिताडुषपहारये राम
इताये वेनम ४ ॥ धारु ॥ थोमंत्रन सा
तोवा उया पुये ॥

३ अथ शोने भजनस्य हनु भैरवस्य मंत्रः ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं भू भुवः
क्षमलवलैर्यै ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ थोने
मूलमंत्रः ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
तुमे नमो हापराक्रम ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
श्री भू भुवः २ ह्रीं २ ह्रीं २ भू २ ह्रीं
मौ गंधधूपदीपवलिपूजा अवतार
२ वलिंग २ सर्वशोना धंशय २ भस्मी

ऊत २ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ अथ सायुज्ये शिवावली
विष्टे विष्टी ॥ ॥ देव्या समीपसं हवते पोताश
नयेये मालकोत्पाव वली विष्टे ॥ त्रिभुवम्
३ ॥ न्याशायये ॥ वलीस चतुर्लोकं याये ॥ ॥
धोमंत्रत आवाहन ॥ ॐ कुर्यात्तुल्यं त्रिभुवम्
मिवाते श्रीपामेश्वरी सर्वा मया श्रीनिवासा
धाकुरु मदुले मत्स्वादिशो स्वाहा ॥ थोते
न आवाहन ॥ देव्या मालकोत्पाये ॥ थना त्रिणी
श्रीली ॥ कुर्यात् कालीके स्वमहा देवी पशुरुपाव

५ मलिका फेरवुं ॐ महायोगेश्वरी श्रीं श्रीं श्रीं काल
 मालिनी गुह्य काली स्वरूपिनी सौतमः स्वाहा ॥ ॥
 षट्कुं ॥ वली ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फेरवुं घोर ह्रीं ह्रीं शि
 वारूपेन वली गृह २ ह्रीं फेर स्वाहा ॥ आवाह
 नादि ॥ सोमो मृदातो धूप दिय याये ॥ जय ॥
 १०८ ॥ स्तोत्र ॥ शिवे ह्येकतर्गत्य जवा पुष्येन
 धारयेत् ॥ मालती कुसुमैश्चैव पूजयेत्सुगदि
 श्वरी ॥ ॥ येथावाणाप्रहागतीत्यादिना योनि
 मृदा ॥ ॥ नमस्कार प्रदक्षिणा ॥ समज न्या
 नछाये ॥ वीशर्जन याये ॥ सर्वे प्रहा क्षमस्व ॥

धो वली जो डगव चिभाये मुडगव तये ॥ मंत्रा
 ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फेर श्रीं ह्रीं ॥ सुह पुये वीने ॥
 तयोतिन शिवा मवीज्या तसा तागाया मूलत जय
 याये ॥ तागाया मूल ध्या ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फेर ॥ जय
 धार १०८ ॥ ॥ इति श्री शिवा वली कर्म विधी स
 माप्तः ॥ शुभम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

20

15

10

5

ॐ नमो श्रीगुरुआज्ञा ॐ नमो श्री
 बीनायकदागकुले भूतकुले वैकुण्ठे
 द्योदकुले ॐ नमो श्रीगुरुआज्ञा
 गद्याग्राचीकनसमंत्रयाज्ञा

ॐ उफोता तथाव स्वपोलनाज्ञा
 कोथे चिक्रा न कुके पुय सापाबिक्रयां
 जीवत ॥ ७. सापाबिक्रयां

ॐ नमो ओदेसगुरुको जपे ह ~~ह~~ दक्षआ
 किं आज्ञा श्रीनरसिंह वेरायो ॥ ७. धाग्रा
 कथाचोचां सूसयाथ मोचातो अधि
 चात्रया लानीव जुलो ७ अधि १ या

श्रीतारादेव्यै नमः॥ ह्रीं का लीठ पदार्पिता हु शवहृष्टो
 गह हासाया खड्ग देवा कर्तृवर्षा भूजा हंकार वि
 जोद्धवा॥ खड्ग नील विशाल पिङ्गल जगः कूटो तिजवा
 लायुता जाड्य न्यस्य कपाल के त्रिजगती हन्मुग्रता
 रास्वर्य॥ ज्वालाग्निमण्डलाभासी चतुर्विंशति
 चनी॥ पाली कुसुमां चार्य धारयती शिवी भवजेत्
 ॥ ॥ अथ भुवनेश्वरी॥ उड्डादिनक मिदुं श्रुति कि
 रित्ती तुंगकूर्चानयन त्रय युक्तो स्मो मुखीं वारीकु
 शपाशी भ्रितिकारी प्रभजे भुवनेश्वरीं॥ ॥ अथ भै
 रवी॥ जवा कुसुम सीकाशी दादिनी कुसुमाय

श्री॥ चतुर्गवी जगः शयी त्रिनेत्री रक्त वादशी॥ माना
 रिका सुभगा पीतोन्नत घनस्तनी॥ पाली कुशवा
 श्रीति धारयती शिवी भवेत्॥ ॥ अथ छिन्नमः
 स्ता॥ पुण्या लीठ पदी संदेव दधती॥ छिन्नै शिवाः क
 र्तृकी दिवस्त्री स्वक वन्ध शोणित सुधाधारोपि
 वन्ती मुद्रा॥ नाग वड्ड शिरो मणिं त्रितयनी हृद्युत्प
 लाद कूर्ता रत्या शक्र मनो भवो यी दृष्टा ध्यायेत्
 वांशान्तिभं॥ दक्षे गतिसिता विमृक्त चिक्रा क
 र्ति तथावर्षा हस्ताभ्यो दधती जोगुणा भवा
 नाम्ना पिसा वर्णिनी॥ देव्या भिन्न कवन्धतद

सृष्ट्यां पिवन्तीं मुदा नागा वडु शिरो मणिर्मनु
 विदा ध्येया तथास्मासु ॥ वामे कृष्णतर्दु तथैव
 धर्ती वडु तथासु ॥ वामे कृष्णतर्दु तथैव
 पदा वन्ध विगल दुर्लभं पिवन्तीं मुदा ॥ सेवायापु
 लये स मरु भुवनं भोक्तुं क्षमताम सी शक्ती ॥ सा
 पिपासा भगवती नाम्ना पाडाकिनी ॥ ॥ अ
 थ क्रमावती ॥ विवागी चञ्चला दुष्टा दीर्घा चमत्
 नाम्ना विमुक्त कुन्तलारुक्ष्या विधवा पालादि
 जा ॥ काक चञ्चला रूढा विलीकित पयोधरा सूर्य
 हस्तातु रुक्षारु धूर्त हस्ता वारिजा ॥ प्रवुड्यो

णातु हसी कठिला कठिले क्षणा क्षुत्पिपासादिता
 नित्यं भयं कलहास्पदा ॥ ॥ अथ वगला ॥ मध्ये
 सुगन्धि मणिमनु पवेदित वी सिंहाशना प्रगिता
 यी पीतवर्णी ॥ पीताम्बा भारा माला विभूषि
 ताङ्गी देवी नमामी चतसुङ्गा वै ॥ जिह्वा ॥ जिह्वा
 प्रमादायको शोदेवी वामेन शत्रु परिपीडयन्ती ॥
 गडाभिघाते तत्र दक्षिणेन पीतो वाङ्गी विभु
 जीतमामि ॥ ॥ अथ मातङ्गी ॥ ततो देवी पाश्चा
 यत साधक स्थिता मानस ॥ इषामाङ्गी शशि शो
 र्वी त्रिनयनी ॥ तत्सिंहासनस्था ॥ वेदे वाङ्गी

८

दशो विवेक कथा श्री कृष्ण धार ॥ अत्यल्प ॥ दशोप
 सिमा शिवा रक्तान्वा परिहृदी ॥ नाना लीला संयुक्ता
 युक्ता हार विभूषिता ॥ दशोप दशो चयुवती पीतोत्त
 ययो धार ॥ कपाल कर्तृका हस्ता यो ज्योतिस्वरूपिणी
 ॥ काम दक्षिणा योगेन ध्यायेन्मंत्र विदाम्यव ॥ ॥ अ
 थ कमलात्मिका ॥ वाला कं शुक्तिमिन्दु वाड विलास
 त कोटि ॥ लोभे युंतीं ज्वला रत्ना कल्प विभूषिता कुल
 गती पाशे कोर्म श्री ॥ यन्मे कोस्तु भात मय्यचि
 रती श्री विभूषा स्मिता ॥ कुलम्भो जविलो जनेत्र
 ययुती ध्यायेत्परा मन्त्रिका ॥ ॥ इति दशम ग

विद्या ध्याना ॥ ॥ कालिता महा विद्या घोडरी भुव
 मे श्वरी ॥ भौवी छिन्न मस्ता च विद्या कुमावती तथा ॥
 वगला सिद्धि विद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ॥ स्ता
 दशमहा विद्या सिद्धि विद्या प्रकिर्तिता ॥ शुभ्र ॥
 यातु शुभ्र मुण्ड मति दुर्ज याक्त वीजी हर्ता मिश्रुम्भ
 पुनो वस शुभ्र मुङ्ग हति स्मो पुदहता चि वेदना
 नी सामे श्रीय दिशतु सत्रु विना शर्तरी ॥ यादेवी
 मधुकैतव प्रमथती जाचाड मुण्डा दिनी जामाद्याम
 हिषा सुक्ष्म करी ॥ याक्त वीजा श्रीया यासी शुभ्र
 मिश्रुम्भ दैत्य दानी यादेव देवा श्रीया सादेवी प्रम
 रक्ष दक्षिणा भुजे चरिड जयो रक्षतु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीउग्रतारादेव्ये ॥ प्रकटविकटदुष्टघोररूपा
 दहासानाशि कृतमालामेघवर्णातिरवर्णा
 त्रिभूवणाजयदात्री हस्तवित्तसत्री कान्तहि
 तकपालापादुर्भीमुग्रता ॥ ॥ जाडाक्षितव
 कोटभेदभवर्त शान्ती भद्राभारदे जाडाक्षितव
 पीठमध्यकमरे चर्यकलके सिता साक्षात्
 नवरवण्डमण्डितकरा पायासदाकुट्टिका ॥ ॥
 पुस्तकाभिकलावामेदक्षदक्षकादायिणी
 लुक्तात्रितयणावालीवाला श्रीत्रिपुराभय
 वाहिनिमहिषारुद्राक्षीगीघोवक्रिका मीना

खिविन्दुमूद्राश्चकोटरूपी नमस्तुते ॥ उदण्डसुर
 मण्डरवण्डितकाकात्यानिसीपूति वृक्षामुण्ड
 धो नमादमुद्धरवद्वङ्ग दण्डधत्ता वृक्षानि
 वामातकाभिसक्री प्रादाश्चित्रिण्याविभूश्च
 मीभिक्तुहान्तरे विजयते देवो महा भैरव ॥ त्व
 तुभूज्यचन्द्रकलावतंसैकचैतने कृकमणश्च
 मे पुण्ड्रेषू चापीकुशयंच वानां हस्ते नमस्ते जग
 देकमाता ॥ २ श्रीउग्रजयजयकालीगुह्यका
 लीलुकाली चलावलाककाली कालागत्रीकका
 ली विरुचीतका काली कालकल्पितकाली ॥ ॥

११

अथाव विजया चैव मोहं न्या कर्षणी तथा । अष्टौ ते
 तायिका भूयाः क्रमेणैव पुष्पजयः ॥ श्री नृत्य भैरा
 यनम ॥ चर्म द्वादश भुक्तं मृग पते किंति कर्षणी
 पयं भद्रमा न्यगम वार्य मातरा शिः श्रेणी च मुक्ताव
 शिः किंते तद्व कर्षणी चतुर्मुखा महा शंखं सुराशो भि
 ती जस्या कल्प विशेष स्रष्टु भगवान् नृत्य श्वरो भे
 रवः ॥ कामारव्या कामरूपा चामुगाडा चण्ड मृगाडा
 प्रकटित महिमा मृगाड माला कलाला विदुं दवीत
 भुवण जननी रुद्र कांती त्रिकांती ॥ रुद्राणी रुद्र
 शक्ति ग्रहणा नमिता चन्द्र नेत्रा त्रिनेत्रा को

मारी कुंकुमाभा त्वमसी भगवती वैद्युवी विद्यु
 मायाः ॥ त्वमसि प्रामरूपा चक्र चक्रे श्वरी त्वं त्व
 मसि विविध रूपा राज्य लक्ष्मी त्वमेव त्वमसि स क
 लनाथो कलान कर्षणी त्वं विा सित वज्र भेदा सव
 राजे श्वरी त्वं ॥ लक्ष्मी पंकज वासिनी त्रिनयनी सव
 मु उद्धारिणी भक्ति भ्या वा देवता ह्रीः प्रियं लक्ष्मी
 नमः स्यं करी ॥ इन्द्रा यणी गजा रूढा हंसी गी हं नवा
 सीनी च्चजा क्षत्रिन्दु मूद्राश्च महिन्द्रा यतमस्तु
 ते ॥ चामुगाडा प्रेत मारूडा रक्त श्वेतांग रूपािनी ॥
 दमरु खड्ग हस्ती च विदु मूद्रा नमोस्तुते ॥ पाणी

20

15

10

5

पुंक्ष कपालमुज्जातो कोठे मुदारे ययु. सर्वो गधुतु
 धारहारधवा देवो स्थिमाता सुज. दिद्यु जिह्मो
 वप्रसाधक धियो भूयोत्तमं स्फुरे. पाथान्त प्रयु. व
 सा नसमये काया लिको संकाश ॥ क्षत्रानां मा धियत्र
 सकल जगतर्तु भैरवो विभक्तर्त्ता. त्राना त्रानां महि
 ता सकल जगतर्तु. जोगीनी चक्र ज्यष्टे. आनन्दो
 विभक्तार्थी नवास गुणाया. खड्ग नेगुण्य भावो. रु
 पातितीतरुया पित्री गणा सहिता. त्राहिमी क्षत्र
 नाथ ॥ क्षत्र पादाया ॥ देवो न्द्रमौली मंदाराम
 करिंद कनारुणा विघ्नीर्त्तु होन्व चानी पुजेनमः

॥ गगो श्रया ॥ ॥



20

15

10

5

0



20

15

10

5

